ACCENT JOURNAL OF ECONOMICS ECOLOGY & ENGINEERING
Peer Reviewed and Refereed Journal, ISSN NO. 2456-1037
Available Online: www.ajeee.co.in/index.php/AJEEE

नशा मुक्ति अभियान में सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका

[१]नीरज कुमार गुर्जर (सहायक प्राध्यापक समाजकार्य)
[२]डॉ मनोरमा चौहान (सहायक प्राध्यापक समाजकार्य)
[१,२]हरदा डिग्री कॉलेज, हरदा (म.प्र.)

सार: नशा आज के समाज की एक गंभीर सामाजिक, आर्थिक एवं स्वास्थ्य संबंधी समस्या के रूप में उभरकर सामने आया है, जो व्यक्ति, परिवार तथा समुदाय को व्यापक रूप से प्रभावित करता है। मादक पदार्थों के बढ़ते उपयोग के कारण अपराध, मानसिक रोग, पारिवारिक विघटन और सामाजिक असंतुलन जैसी समस्याएँ निरंतर बढ़ रही हैं। इस संदर्भ में नशा मुक्ति अभियान एक महत्वपूर्ण सामाजिक हस्तक्षेप के रूप में कार्य करता है, जिसका उद्देश्य लोगों को नशे के दुष्प्रभावों से अवगत कराना तथा उन्हें नशामुक्त जीवन की ओर प्रेरित करना है। यह शोध नशा मुक्ति अभियान में सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका का विश्लेषण करता है। सामाजिक कार्यकर्ता जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन, परामर्श सेवाएँ प्रदान करना, पुनर्वास केंद्रों में सहायता, तथा समुदाय स्तर पर सहभागिता सुनिश्चित करने जैसे कार्यों के माध्यम से महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। वे नशे के शिकार व्यक्तियों को सामाजिक और मानसिक रूप से सशक्त बनाकर उन्हें पुनः मुख्यधारा में लाने का प्रयास करते हैं। यह अध्ययन द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है और वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग करता है। निष्कर्षतः यह स्पष्ट होता है कि नशा मुक्ति अभियान की सफलता में सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका अत्यं त महत्वपूर्ण और अनिवार्य है। उनके प्रयासों से न केवल नशे की समस्या को कम किया जा सकता है, बल्कि एक स्वस्थ और जागरूक समाज का निर्माण भी संभव है।

कुंजी शब्द: नशा मुक्ति, सामाजिक कार्यकर्ता, पुनर्वास, जागरूकता, मादक पदार्थ, सामाजिक समस्या

१. प्रस्तावना:

वर्तमान समय में नशा एक गंभीर सामाजिक समस्या के रूप में उभरकर सामने आया है, जो व्यक्ति, परिवार और समाज तीनों के लिए हानिकारक सिद्ध हो रहा है। मादक पदार्थों जैसे शराब, तंबाकू, ड्रग्स एवं अन्य नशीले पदार्थों का बढ़ता सेवन विशेष रूप से युवाओं के बीच चिंता का विषय बन गया है। नशे की लत व्यक्ति के शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक संतुलन, सामाजिक संबंधों और आर्थिक स्थिति को भी प्रभावित करती है। इसके परिणामस्वरूप अपराध, घरेलू हिंसा, बेरोजगारी और सामाजिक विघटन जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। इस गंभीर समस्या के समाधान के लिए नशा मुक्ति अभियान एक महत्वपूर्ण सामाजिक पहल के रूप में कार्य कर रहा है। इसका उद्देश्य लोगों में जागरूकता फैलाना, नशे के दुष्प्रभावों के प्रति सचेत करना तथा नशे के आदी व्यक्तियों को उपचार एवं पुनर्वास की सुविधा प्रदान करना है। इस अभियान की सफलता में सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। सामाजिक कार्यकर्ता समाज और प्रभावित व्यक्तियों के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करते हैं। वे जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन, परामर्श सेवाएँ प्रदान करना, पुनर्वास केंद्रों में सहयोग देना तथा सरकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन में सहायता करते हैं। साथ ही वे समुदाय को सक्रिय रूप से इस अभियान से जोड़कर सामाजिक परिवर्तन की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। अतः यह आवश्यक है कि नशा मुक्ति अभियान में सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका का गहन

अध्ययन किया जाए, ताकि इस समस्या के प्रभावी समाधान के लिए बेहतर रणनीतियाँ विकसित की जा सकें।

२. नशा: एक सामाजिक समस्या:

- **नशे की परिभाषा:**
  नशा वह स्थिति है जिसमें व्यक्ति किसी मादक पदार्थ के सेवन का आदी हो जाता है और उसके बिना सामान्य जीवन जीने में असमर्थ हो जाता है।
- **नशे के प्रकार:**
  - शराब (Alcohol)
  - तंबाकू (Tobacco)
  - ड्रग्स (Drugs)
  - इंजेक्शन द्वारा मादक पदार्थ
  - प्रिस्क्रिप्शन दवाओं का दुरुपयोग
- **नशे के कारण:**
  - मानसिक तनाव और अवसाद
  - बेरोजगारी
  - गलत संगति
  - पारिवारिक समस्याएँ
  - सामाजिक दबाव
- **नशे के दुष्परिणाम:**
  - स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव (कैंसर, लीवर रोग)
  - आर्थिक हानि
  - पारिवारिक कलह
  - अपराध में वृद्धि
  - सामाजिक प्रतिष्ठा में गिरावट

३. नशा मुक्ति अभियान का महत्व:

नशा मुक्ति अभियान समाज को नशे के दुष्प्रभावों से बचाने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है। इसके प्रमुख उद्देश्य हैं:

- लोगों में जागरूकता फैलाना
- नशे की लत से ग्रसित व्यक्तियों का उपचार
- पुनर्वास और पुनर्स्थापन
- समाज में सकारात्मक वातावरण का निर्माण

४. सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका:

नशा मुक्ति अभियान में सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका बहुआयामी और अत्यंत महत्वपूर्ण है।

- **जागरूकता फैलाना:** सामाजिक कार्यकर्ता विभिन्न माध्यमों से लोगों में जागरूकता फैलाते हैं:
  - रैलियाँ और अभियान
  - स्कूल और कॉलेज कार्यक्रम
  - नुक्कड़ नाटक
  - सोशल मीडिया

वे लोगों को नशे के दुष्प्रभावों के बारे में जानकारी देते हैं।

- **परामर्श** : नशे के आदी व्यक्तियों को मानसिक और भावनात्मक सहायता की आवश्यकता होती है। सामाजिक कार्यकर्ता:
  - व्यक्तिगत परामर्श देते हैं
  - परिवार को भी मार्गदर्शन प्रदान करते हैं
  - पुनर्वास के लिए प्रेरित करते हैं
- **पुनर्वास सेवाएँ**

सामाजिक कार्यकर्ता नशा मुक्ति केंद्रों में कार्य करते हैं और:

  - मरीजों के पुनर्वास में सहायता करते हैं
  - रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने में मदद करते हैं
  - सामाजिक पुनर्स्थापन सुनिश्चित करते हैं

- **नीति कार्यान्वयन**

सरकार द्वारा बनाई गई नीतियों और योजनाओं को लागू करने में सामाजिक कार्यकर्ता महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

- **समुदाय सहभागिता**

सामाजिक कार्यकर्ता समुदाय के लोगों को इस अभियान में शामिल करते हैं:

  - स्वयंसेवी संगठनों के साथ सहयोग
  - सामुदायिक बैठकों का आयोजन
  - स्थानीय नेताओं को जोड़ना

५. नशा मुक्ति में उपयोगी रणनीतियाँ:

- **शिक्षा और जागरूकता:** शिक्षा के माध्यम से लोगों को नशे के दुष्प्रभावों से अवगत कराया जाता है।
- **पुनर्वास केंद्र:** नशा मुक्ति केंद्रों में चिकित्सा और परामर्श सेवाएँ प्रदान की जाती हैं।
- **परिवार का सहयोग:** परिवार का सहयोग नशा छोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- **सरकारी योजनाएँ:**सरकार द्वारा विभिन्न योजनाएँ चलाई जाती हैं, जैसे:
  - नशा मुक्त भारत अभियान
  - स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम

६. चुनौतियाँ:

सामाजिक कलंक:

- संसाधनों की कमी
- पुनर्वास केंद्रों की सीमित संख्या
- पुनः नशे की प्रवृत्ति (Relapse)
- जागरूकता का अभाव

७.अनुसंधान पद्धति:

"नशा मुक्ति अभियान में सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका" विषय पर यह अध्ययन **वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति** पर आधारित है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य नशा मुक्ति अभियान में सामाजिक कार्यकर्ताओं के योगदान, उनकी कार्यप्रणाली तथा उनके प्रभाव का अध्ययन करना है।

- **अनुसंधान डिजाइन:** यह अध्ययन **गुणात्मक** पर आधारित है, जिसमें विषय से संबंधित अवधारणाओं, सिद्धांतों तथा व्यवहारिक पहलुओं का विश्लेषण किया गया है। यह शोध मुख्यतः सैद्धांतिक एवं व्याख्यात्मक प्रकृति का है।
- **डेटा के स्रोत:** इस शोध में **द्वितीयक आंकड़ों** का उपयोग किया गया है। डेटा निम्न स्रोतों से संकलित किया गया है:
  - विभिन्न पुस्तकों एवं पाठ्य सामग्री
  - शोध पत्र एवं जर्नल्स
  - सरकारी रिपोर्ट एवं दस्तावेज
  - नशा मुक्ति अभियान से संबंधित आधिकारिक वेबसाइट्स
  - गैर-सरकारी संगठनों की रिपोर्ट्स
- **डेटा संग्रहण विधि:** डेटा का संग्रहण **साहित्य समीक्षा** के माध्यम से किया गया है। इस प्रक्रिया में प्रासंगिक सामग्री का चयन निम्न आधारों पर किया गया:
  - विषय से संबंधितता
  - स्रोत की विश्वसनीयता
  - नवीनता एवं प्रासंगिकता
- **विश्लेषण की विधि:** एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण **गुणात्मक विश्लेषण** के माध्यम से किया गया है। इसमें:
  - सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका का व्याख्यात्मक अध्ययन
  - विभिन्न अध्ययनों का तुलनात्मक विश्लेषण

- नशा मुक्ति कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का आकलन

- **अध्ययन का क्षेत्र:**

यह अध्ययन नशा मुक्ति अभियान के अंतर्गत सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका, उनके द्वारा अपनाई गई रणनीतियों तथा समाज पर उनके प्रभाव तक सीमित है। इसमें विशेष रूप से भारत के संदर्भ को ध्यान में रखा गया है।

- **सीमाएँ:**
  - अध्ययन केवल द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है
  - प्राथमिक डेटा का अभाव
  - निष्कर्ष उपलब्ध साहित्य पर निर्भर हैं
  - क्षेत्रीय विविधताओं का पूर्ण विश्लेषण संभव नहीं है

८. नैतिक पक्ष:

इस अध्ययन में सभी स्रोतों का उचित संदर्भ दिया गया है तथा किसी भी प्रकार की साहित्यिक चोरी से बचा गया है। शोध कार्य में अकादमिक ईमानदारी का पूर्ण ध्यान रखा गया है। इस प्रकार, यह अनुसंधान पद्धति नशा मुक्ति अभियान में सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका को समझने और उसका विश्लेषण करने के लिए एक व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक आधार प्रदान करती है।

९. निष्कर्ष: नशा मुक्ति अभियान में सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण, प्रभावशाली और बहुआयामी सिद्ध होती है। प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि नशे की समस्या केवल एक व्यक्तिगत आदत नहीं, बल्कि एक गंभीर सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य संबंधी समस्या है, जिसका समाधान सामूहिक प्रयासों से ही संभव है। इस संदर्भ में सामाजिक कार्यकर्ता एक सशक्त माध्यम के रूप में कार्य करते हैं। सामाजिक कार्यकर्ता न केवल नशा पीड़ित व्यक्तियों की पहचान और पुनर्वास में सहयोग करते हैं, बल्कि वे समाज में जागरूकता फैलाने, परिवारों को परामर्श देने और नशे के दुष्प्रभावों के प्रति लोगों को शिक्षित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनके द्वारा आयोजित जागरूकता अभियान, काउंसलिंग सत्र, पुनर्वास कार्यक्रम और सामुदायिक सहभागिता नशा उन्मूलन की दिशा में प्रभावी सिद्ध होते हैं। इसके अतिरिक्त, सामाजिक कार्यकर्ता सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं के बीच समन्वय स्थापित कर नीतियों और योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन में भी योगदान देते हैं। वे नशा पीड़ितों के सामाजिक पुनर्स्थापन और आत्मनिर्भरता के लिए आवश्यक सहायता प्रदान करते हैं, जिससे वे पुनः समाज की मुख्यधारा में सम्मिलित हो सकें। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि नशा मुक्ति अभियान की सफलता में सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका केंद्रीय और अनिवार्य है। उनके समर्पण, संवेदनशीलता और सक्रिय प्रयासों के बिना नशे जैसी जटिल समस्या का स्थायी समाधान संभव नहीं है। इसलिए, इस दिशा में सामाजिक कार्यकर्ताओं को अधिक संसाधन, प्रशिक्षण और संस्थागत समर्थन प्रदान किया जाना आवश्यक है, ताकि वे समाज को नशामुक्त बनाने में और अधिक प्रभावी योगदान दे सकें।

संदर्भ:

1. सिंह, आर.के. (2018). *नशा मुक्ति और सामाजिक कार्य*. नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन।
2. शर्मा, वी.के. (2019). *सामाजिक कार्य के सिद्धांत और व्यवहार*. जयपुर: पॉइंटर पब्लिशर्स।
3. गुप्ता, एम.एल. (2017). *भारतीय समाज में नशाखोरी की समस्या*. आगरा: साहित्य भवन।

4. वर्मा, एस.पी. (2020). *सामाजिक समस्याएँ और समाधान*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
5. तिवारी, डी.एन. (2016). *सामाजिक कार्य: एक परिचय*. लखनऊ: उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान।
6. भारत सरकार, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय (2021). *नशा मुक्ति हेतु राष्ट्रीय कार्ययोजना (NAPDDR)*. नई दिल्ली।
7. राष्ट्रीय सामाजिक रक्षा संस्थान (NISD) (2019). *भारत में नशा मुक्ति कार्यक्रम*. नई दिल्ली।
8. विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) (2020). *मादक पदार्थों के दुरुपयोग पर रिपोर्ट*. जिनेवा।
9. संयुक्त राष्ट्र मादक पदार्थ एवं अपराध कार्यालय (UNODC) (2021). *विश्व मादक पदार्थ रिपोर्ट*. वियना।
10. भारतीय सामाजिक कार्य पत्रिका (2022). “नशा मुक्ति कार्यक्रमों में सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका”, खंड 83(2), पृ. 145–158।
11. अंतरराष्ट्रीय सामाजिक कार्य जर्नल (2021). “नशा रोकथाम में सामुदायिक हस्तक्षेप”, खंड 10(1), पृ. 55–63।
12. सामाजिक अनुसंधान पत्रिका (2020). “नशाखोरी और पुनर्वास प्रक्रिया”, अंक 15, पृ. 88–96।
13. शर्मा, पी. (2021). “भारत में नशाखोरी और सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका”, *अंतरराष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान समीक्षा*, 9(3), पृ. 78–85।
14. कुमार, ए. (2022). “नशा मुक्ति में जागरूकता कार्यक्रमों की प्रभावशीलता”, *भारतीय अनुप्रयुक्त अनुसंधान पत्रिका*, 12(4), पृ. 120–125।
15. यूनेस्को (2020). *नशा रोकथाम में शिक्षा और जागरूकता*. पेरिस।